Vol III Issue V June 2013
Impact Factor : 0.2105 ISSN No : 2230-7850

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-chief
H.N.Jagtap

IMPACT FACTOR : 0.2105

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Indian Streams Research Journal
Volume 3, Issue. 5, June. 2013
ISSN:-2230-7850

Available online at www.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

संपर्क भाषा के रूप में हिंदी की संप्रेषणीयता (लोकोक्ति साहित्य के विशेष संदर्भ में)

माधुरी यादव

सारांश:

पानी जिस बर्तन में जाता है उसका आकार ग्रहण कर लेता है, हर रंग उसमें घुल–मिलकर अपनी पहचान बना लेता है, उसी प्रकार हिंदी में बडी सहजता से अन्य भाषाओं के शब्द समाकर समरस हो जाते हैं, इसीलिए वह देश–दुनिया की सर्वोत्तम संपर्क भाषा है । माध्यम पारंपरिक हो या आधुनिक, जनसंचार व जनसंपर्क के लिए हिंदी एक सशक्त, प्रभावी और सर्वमान्य भाषा है । एक ओर यह अपने साथ परंपरा का प्रवाह लेकर चलती रही है, वही दूसरी ओर आधुनिकीकरणके दौर में उसने अपना श्रेष्ठ स्थान बनाए रखा है ।

प्रस्तावना :

जब हम हिंदी की संप्रेषणीयता की बात करते हैं तो हिन्दी की पारंपरिक बोलियों की ओर अनदेखा नही किया जा सकता है, क्योंकि इन देशी भाषा–बोलियों में वह अकूत ज्ञान–संपदा छिपी हुई जो मनुष्य को उसके श्रेष्ठतव की ओर मोडकर उसे निरंतर गतिशील रखते हुए चलना सिखाती है । इस दृष्टि से लोकोक्ति साहित्य का महत्व सार्वदेशिक व सार्वकालिक है ।

महात्मा गांधी का कथन है– '' देशी भाषा का अनादन राष्ट्रीय आत्महत्या है '' ।1

भारत वस्तुतः कृषिप्रधान देश है । यहाँ ही अधिकांश जनता गॉवो में ही बसती है । ग्रामीण जनता जब शहरों की ओर पलायन करती है अथवा आकर बसती है तो अपने साथ अपनी परंपराएँ और भाषा –बोली भी साथ लेकर चलती हैं । शहरों के दिखाई देने वाले पारंपरिक रीति–नीति, मूलभूत आधार व नैतिकता, चारित्रिक उत्कर्श में गॉवो की ही लेन हैं । ऐसे में पारम्परिक माध्यमों का जनसंचार के सांधनों में प्रयुक्त होना सभी के लिए मनोरंजक, सरलतम, भावपूर्ण, चुटीला माध्यम सिध्द होता है । भाषिक अभिव्यकित में लोकोक्तियों का सर्वाधिक प्रयोग होता है । लोकोक्तियाँ सामासिक अर्थात समास शैली मतें सूत्रात्मक होती हैं, इनमें विद्यमान वाक्यान्वित, अर्थ–सम्प्रेषणीयता, आलंकारिकता, तुकान्तता, छन्दोबध्दता, व्यंजनात्मकता, लक्षणापरकता इत्यादि अनेक गुण होने से इनके द्वारा सीमित शब्दों में ज्यादा प्रभावी भाषिक–अभिव्यक्ति की जा सकती है ।

इस क्रम में सर्वाधिक महत्वपूर्ण गुण है लोकोक्तियों की संप्रेषणीयता । यही कारण है कि अनपढ व निरक्षर लोग भी इसे आसानी से समझकर स्मरण में रख पाते हैं । संप्रेषणीयता के गुण के कारण ही एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक फैलते–फैलते ये संपूर्ण समाज में फैल जाती हैं । लोकोक्तियों का यह गुण वास्तव में अदभूत है । उदाहरणतः हम देखें हाथी के दॉत खाने के और दिखाने के और, अब आया उँट पहाड के नीचे, सौ सुनार की एक लुहार की, ईंट का जवाब पत्थर से जैसी लोकोक्ति अत्यंत पेनेपन के साथ अदभूत प्रभावान्विति से ओतप्रोत हैं ।

वर्तमान युग जनसंचार का युग है । जनसंचार को सफल बनाने के लिये जन–संपर्क आवश्यक है । जनसंचार वस्तुतः विज्ञान है और जन संपर्क कला है । 'सूचना', 'प्रचार', 'विज्ञापन','पब्लिसिटी' हेतु प्रयुक्त द्रुतगामी संचार माध्यम विज्ञान की देन हैं । इनके सुनियोजित और प्रभावोत्पादक प्रयोग द्वारा एक कलाकार जन–मानस को अपने पक्ष में करता हैं । इस तरह जनसंपर्क एक ऐसी कला है जिसके लिये जनसंचार साधन सुलभ करता है । शासक, शासित, शिक्षित, अशिक्षित, अमीर–गरीब सभी अपने हित में अपनी बात दूसरों तक पहुँचाकर जन–संपर्क से लाभान्वित होते हैं – 'महाजनो येन गत स पथाः की सार्थकता जनसंपर्क से सिध्द होती है ।'

हम कह सकते हैं विचारों परिवर्तन लाने के लिए उत्प्रेरित करना, विकास हेतु उपयुक्त वातावरण बनाना, प्रवृत्ति और परम्परा को प्रभावित करना, कृषकों, उद्योग कर्मियों, शिक्षकों, विकास कार्यकर्ताओं और अधिकारियों को शिक्षित–प्रशिक्षित करना अर्थात समाज के हर वर्ग के साथ संपर्क स्थापित करना ही जनसंपर्क का प्रमुख कार्य है । यह जनता से जुडा कार्य है और जनता की अपनी भाषा में यदि यह किया जाएगा तो ज्यादा प्रभावी, आसान तथा कम समय में किया जा सकता है । हमारे देश में हिन्दी भाषा को सर्वाधिक लोग बोलते–समझाते हैं । अतः इसके द्वारा जनसंपर्क में अधिक सहजता संभव है । जनसंचार के साधनों में परंपरागत माध्यम, इलेक्ट्रानिक माध्यम, मुद्रित माध्यम, मौखिक संचार माध्यम, बाह्य माध्यमों का प्रयोग किया जाता है ।

संपर्क के साधनों में यह ध्यान रखा जाता है कि वह किस श्रेणी के लिए है । अर्थात् उस व्यक्ति में उसकी भाशा समझने की योग्यता है या नही । फिर सरलता से पहुँचने वाला माध्यम ही वरेण्या होता है, संपर्क के माध्यम में यदि दृश्य–श्रव्य दोनों प्रकार के माध्यमों का प्रयोग किया जाए तो और उसकी प्रभावशीलता अधिक तथा उस पर होने वाला व्यय कम से कम होगा ।

उपरोक्त सभी तथ्यों को ध्यान में रखें तो हिन्दी सर्वाधिक उपयुक्त संपर्क भाशा है । जब पारंपरिक माध्यमों से यह प्रसारित या अभिव्यक्त होती है तो बोलियों के सामंजस्य के साथ यह सोने में सुहागे की तरह प्रभावशाली हो जाती है ।

पारंपरिक माध्यमों मे कठपुतली, लोकनृत्य, लोकनाटय्, गीत व लोकसाहित्य की अन्य विधाओं को स्वीकारा गया है । सम्पूर्ण देश में ग्रामीण बोलियों व पारंपरिक माध्यमों के द्वारा ज्यादा प्रभावी ढंग से जनसंचार संभव है । कठपुतली के खेल, गॉव– नगर, अमीर–गरीब, राजदरबार या धर्मस्थलों पर समान रूप से प्रदर्शित होते आए हैं तो वहीं पर लोकसाहित्य के अंतर्गत लोकनाट्य लोकगीत, रामलीला,

Title : *'संपर्क भाषा के रूप में हिंदी की संप्रेषणीयता (लोकोक्ति साहित्य के विशेष संदर्भ मे)*
Source:Indian Streams Research Journal [2230-7850] *माधुरी यादव* **yr:2013 vol:3 iss:5**

लोककलाओं का प्रयोग परंपरागत रूप से जुडा है ।

हमारी प्राचीन परंपरा सामर्थ्यशाली व गौरवमयी रही है । जहॉं लोकगीतों को जहॉं नारी का आभूषण माना है, वही लोकनाट्य ग्रामीण जनजीवन के सर्वाधिक मनोरंजक साधन है । लोककथाऍं– लोकगाथाऍं जनमानस अपना अमिट प्रभाव छोडती है । इसी क्रम में लोकोक्तियॉं अनुभव की दुहिताऍं कही गई हैं । इन अमूल्य ज्ञान एवं व्यवहार निधियों का आज भी अत्यधिक प्रभाव है ।

चौमासा पत्रिका के लोकसाहित्य अंक के एक लेख में कहा गया है – '' लोकसाहित्य लोक चेतना का साहित्य है । लोक साहित्य लोक चेतना से उद्भूत होकर फिर लोक चेतना को प्रभावित भी करता है, वही लोक चेतना, जो अंततः लोकतंत्र की नियामक, है लोकमंच को गति और दिशा देती है'' ।[2]

इसी प्रकार लोक के संबंध में यह भी कहा गया है – मनुष्य की उस सत्ता का नाम लोक है, जहॉं जाति –पॉंति, उंच–नीच, अमीर –गरीब, शासक–शासित, सबल–निर्बल, ग्राम्य–नगर, देशी–विदेशी, गोरे–काले, स्त्री–पुरुष, शिक्षित–अशिक्षित, धर्म–संप्रदाय तथा क्षेत्रीयता आदि की समस्त सीमाऍं टूट जांय । समस्त बंधन खुल जांय । तत्वतः सभी भेदभाव बाहरी हैं, इसलिए वे आवरण हैं । आवरण के नीचे जो सामान्य मनुष्य है, वह 'लोक' है ।[3] अतः लोक के लिए संचार व संपर्क का सर्वश्रेश्ठ माध्यम पारंपरिक साधन है ।

' लोकोक्ति ' का शाब्दिक अर्थ है – ' लोक की उक्ति ' । लोकमानस जब अनुभूत ज्ञान को कुछ शब्दों या पदसमूह में अभिव्यक्त करता है तो वह लोकोक्ति के रूप में हमारे सामने आता है ।'' लोकोक्ति जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, पहले बोलचाल की भाषा से बनती है । रूढ होती है, फिर वही अनेक बार अपनी लोकप्रियता के कारण साहित्य की भाषा में अपना आसन जमा लेती हैं ।

लोकोक्तियों का सर्वाधिक महत्व, इस दुष्टि से है कि यह जनमानस के सर्वाधिक निकट रहती हैं । जहॉं एक लंबा व्याख्यान उतना प्रभाव नही छोड पाता वहीं एक छोटसी सी लोकोक्ति, कही ज्यादा प्रभावी व मार्मिक बन जाती है । जैसे कोई अल्पज्ञ बढ–चढकर अपने ज्ञान की शेखी बघारे तो कह दिया जाता है – ' थोथा चना बाजे घना ' या ' अधजल गगरी छलकत जाय ' यह उसकी मनोगत प्रवृत्ति के लिए बहुत सटीक पडती है । लोकोक्तियों के लिए रामनारायण उपाध्याय जो कि निमाडी लोकसाहित्य के अध्येता माने जाते हैं, उनका कथन है – लोकोक्ति मानवी ज्ञान के चोखे और चुभते सूत्र हैं । जनसंचार भी जनता के लिए है । इस प्रकार लोकोक्ति का प्रयोग ज्यादा प्रभावी माध्यम है । वैसे भी समझादार को इशारा काफी होता है ।

लोकोक्कियॉं सूत्रात्मक होती हैं परंतु उनमें भावबोध गंभीर होता है, इसीलिए इनमें सूत्र रूप में सीधे हृदय तक पहुॅंचने की क्षमता होती है, साथ ही इन पर पूरे समाज का विश्वास होता है । इनके बारे में जानने के लिए जब अनेक लोगों से संपर्क किया गया तो उन्होंने कहा कि हम ऐसे तो आपको बता नहीं सकते कि हमें कितनी लोकोक्तियॉं याद है ? पर जब संवाद या वार्तालाप होता है जो ये स्वतः हृदय से निकलती जाती हैं । वहीं औपचारिक प्रयोग में जब कोई व्यक्ति अपने व्याख्यान या कोई बात या विचार लोगों के समक्ष रखता है तो प्रारंभ में कोई उक्ति, सुक्ति या लोकोक्ति से शुरुआत करता है । सभी भीतर वह उक्ति सीधे प्रवेश करती है । जिससे आधा उद्देश्य की वही पूरा हो जाता है । यह माना गया है कि किसी काम की अच्छी शुरुआत आधी सफलता है ।

लेखन की अनेक विधाओं विशेषकर गद्य विधाओं में लोकोक्तियॉं सर्वाधिक प्रयोग में लाई जाती है । मुंशी प्रेमचंद जी जिनको हिन्दी उपन्यास व कहानी के सम्राट संज्ञा से विभूषित किया गया है, उनकी शायद ही कोई कहानी या उपन्यास हो जिसमें लोकोक्ति या कहावत का प्रयोग न किया गया हो ।

लोकोक्तियों में गागर में सागर समाया होता है । इन सभी विशेषताओं के कारण समाचार पत्र, दृश्य–श्रव्य माध्यमों में इसका प्रयोग किया जाता है । कई शीर्षकों में लोकोक्तियों को प्रयोग में लाया जाता है और सीधे संपर्क के लिए भी इनका प्रयोग होता है ।

निष्कर्षतः हम कह सकते है कि जनसंचार में प्रयुक्त भाषा में यदि सटीक लोकोक्तियों का उपयोग करेंगे तो वह भाशा को और अधिक प्रभावी और प्रयोजनीय बनाएगी । हिंन्दी और उसकी क्षेत्रीय बोलियॉं, लोकोक्ति और कहावतों से समृध्द हैं ।

संदर्भ सूची

1.डॉ.तिवारी अर्जुन, जनसंचार और हिन्दी पत्रकारिता, जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, सन 2004, पृ 66
2.चौमासा ;अंक कमांक 50–51द्ध ए मध्यप्रदेश आदिवासी लोक कला परिशद, भोपाल, पृ. 57
3.शर्मा हरद्वारीलाल, लोकोक्ति और लोक विज्ञान, पृ.167
4.सहल कन्हैयालाल, राजस्थानी कहावतें, भारतीय साहित्य मंदिर, फव्वारा, दिल्ली 1958 पृ 48

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- ✶ International Scientific Journal Consortium Scientific
- ✶ OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net